पंचम - अध्याय

उपसंहार

श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द कृत " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास का आनुशीलन " लघु शोध प्रबन्ध में उपसंहार नामक पंचम अध्याय में इस लघु-शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक की सारी बातें संक्षिप्त में दी जा रही हैं।

हिन्दी साहित्य की काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक विधाओं में मिलिन्दजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस कलामर्मज्ञ, बहुभाषाविद्, प्रतिभासंपन्न लेखक का जन्म एक प्रतिष्ठित सुसंस्कृत परिवार में हुआ है। लेखक ने अपनी प्रखर बुध्दि एवं अथक परिश्रम से अपनी प्रतिभा को बहुमुखी बना दिया। उनके साहित्य का विषय ऐतिहासिक पात्र, घटना, तिथि आदि रहें हैं। वे स्वयं सन् १९२० से १९४७ तक स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से कार्य करते रहें। अत: देशभक्ति, स्वाधीनता की कामना, मानवतावाद, क्रांति की प्रबल कामना उनके प्रिय विषय रहे हैं। उनका साहित्य उनके जीवनानुभवसे जुडा हुआ है। उनके समग्र साहित्य में उन्होंने जो देखा, अनुभूत किया उसी का ईमानदारी के साथ यथार्थवादी अंकन किया है। वास्तव में उनका साहित्य कल्पना के वायुमंडल में विचरन न कर ठोस मिट्टी के साथ जुडा हुआ है।

व्दितीय अध्याय में " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास के तत्वों के आधार पर समीक्षा की है।

मिलिन्द जी ने प्रमुख ऐतिहासिक घटना १८५७ ई. के संग्राम का सजीव - रोचक चित्रण करते हुए इस संग्राम के नेता का प्रभावी अंकन किया है। आलोच्य उपन्यास की कथावस्तु रोचक मौलिक, मार्मिक, जीवनानुभूति से जुडी एवं स्वाधीनता तथा क्रांति की भावना विकसित करनेवाली है।

प्रमुख एवं गौण पात्रों का चित्रण ऐतिहासिकता कसौटी पर खरा उतरने वाला है। तात्या टोपे का चित्रण लेखक की अपनी मौलिकता एंव प्रतिभा की उपज है। नारी पात्रों के चित्रण में लेखक ने उदारवादी दृष्टिट का परिचय देते हुए स्पष्ट किया है कि नारी के सहयोग के बिना पुरुष का जीवन एवं कार्य अधूरा है। उपन्यास के नारी पात्रों के चित्रण के व्दारा लेखक ने अपने नीजी अनुभवों को देने का प्रयत्न किया है।

उपन्यास में सरल, सहज एवं प्रभावपूर्ण संवादो का प्रयोग किया है। लेखक ने चारित्रिक विशेषताओं को व्यक्त करने वाले तथा मनोभवों को अभिव्यक्त करने वाले सवादों का प्रयोग किया है। इस उपन्यास के संवादो की विशेषताएँ हैं। वातावरण निर्मिति करने वाले, प्रसंगानुकूल पात्रानुकूल एंव रोचक।

उपन्यास ऐतिहासिक होने के कारण इसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थिति और सांस्कृतिक उत्सव आदि का वर्णन इस अध्याय में देने का प्रयास किया गया है। लेखक ने युगीन पृष्ठभूमि को देकर उपन्यास को सफल बनाया है।

उपन्यास की भाषा अत्यधिक स्वच्छ, प्रांजल और प्रभावी है। लेखक ने उपन्यास के अंतर्गत उर्दू, संस्कृत, इंग्लिश, मराठी आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

लेखक ने वर्णनात्मक, कथात्मक एंव संवाद शैली में लिखा है।

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " शीर्षक छोटा होकर अपने - आप में बडा है। शीर्षक योग्य विषयानुकूल एंव जिज्ञासा निर्माण करने वाला है।

उपन्यासकार तात्या टोपे के जीवन चरित्र को प्रकाशित कर देशवासियों के मनमें स्वाधीनता की भावना निर्माण करना चाहते हैं तथा पाठकों की स्वाधीनता संग्राम के पहले प्रयास से परिचित करना चाहते हैं। उपन्यासकार अपने उद्देश में सफल हो गए हैं।

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " ऐतिहासिकता की समस्त विशेषताँए पूर्ण करनेवाला उपन्यास है। इसमें वर्णित घटनाएँ, स्थल, पात्र एंव तिथियाँ इतिहास के साथ मेल खाती हैं अत: इसे ऐतिहासिक उपन्यास को कोटि में रखा जाता है।

स्वदेश गौरव एवं राष्ट्र भक्ति, अतीत का गौरवगान, नवजागरण का उद्बोधन, उद्बोधन का आवाहन, देश के स्वर्गिम भविष्य का विवेचन विदेशी शासन के प्रति विद्रोह की भावना तथा क्रांति भावना, बलिदान की भावना, इतिहास प्रेम, संस्कृत प्रेम, स्वतंत्रता, संघर्ष, जातीय तथा भौगोलिक एकता मानवतावाद आदि अनेकानेक विशेषताओंका प्रभावी चित्रण मिलिन्द जी ने किया है। उक्त विशेषताएँ राष्ट्रीयता के मानदंड होने के कारण आलोच्य उपन्यास को राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति करने वाला उपन्यास माना जाता है।

लघु शोध प्रबन्ध के लेखन के प्रारम्भ में मेरे मन में अनेक प्रश्न निर्माण हो गए थे। उन प्रश्नों के समाधान का प्रयास ही प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध है। मेरे मन में उपस्थित सभी प्रश्नों के उत्तर मैंने प्राप्त किए हैं। अत: यह मेरा प्रयास मेरी दृष्टि में सफल रहा है।

जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द के उपन्यास के अनुशीलन का प्राय: यह मेरा पहला प्रयास है। मैंने केवल उपन्यासकार का परिचय एवं उपन्यास की ऐतिहासिकता और राष्ट्रीयता को देखने का प्रयास किया है। पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, ऐतिहासिक उपन्यासों में जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द की विशेषताएँ एवं स्थान जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना आदि विषयोंपर अनुसंधान किया जा सकता है। यह विषयसूची मैंने केवल संकेत रूप देने का प्रयत्न किया है।

सहायक ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ — संस्करण -१९८०

[१] जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द :- "क्रांतिवीर तात्या टोपे" प्रकाशक: समता प्रकाशन
श्री देवकीनंदन कंचन
२१ गुसाईपुरा,
खत्रियाना मार्ग,
झाँसी [उत्तर प्रदेश]

सहायक ग्रन्थ सूची :-

	उपन्यासकार ग्रन्थकार	उपन्यास ग्रन्थ	प्रकाशन	प्राप्त संस्करण
[१]	अग्निहोत्री श्रीनारायण	तत्व एवं स्म विधान	आचार्य शुक्ल साधना-सदन, कानपूर	प्रथम संस्करण -१९६२
[२]	कलवडे सुधाकर शंकर	आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना	पुस्तक संस्थान, १०९/५०ए, नेहरु नगर, कानपूर-१२	फरवरी-१९७३ प्रथम संस्करण
[३]	गुप्त गणपति चन्द्र	साहित्यिक निबन्ध	आशोक प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली.	तृतीय संस्करण १९६४
[४]	गुप्त विधानाथ	हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना	भारतीय साहित्य मन्दिर, रामनगर, नई दिल्ली-११	१९६६
[५]	घुघ सत्यपाल	हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास प्रतिमान एवं विकासेतिहास	कोणार्क प्रकाशन कमलानगर, दिल्ली ११०००७.	प्रथम संस्करण १९७८
[६]	त्रिगुणायत गोविन्द	नवीन साहित्यिक निबन्ध	विनोद पुस्तक मन्दिर, कार्यालय-रांगेय राघव मार्ग, आगरा-२.	प्रथम संस्करण १९७२

१.	२.	३.	४.	५.
[७]	ठक्कर पुष्पा	दिनकर के काव्य में युगचेतना	अरविन्द प्रकाशन, सखाराम लांजेकर मार्ग, परेल, बम्बई-१२.	प्रथम संस्करण मार्च, १९८६.
[८]	दीपंकर आचार्य	स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ	जनमत प्रकाशन पूर्वी कचहरी शोठ मेरठ	प्रथम संस्करण १० मई, १९९३.
[९]	दरडा रणजीतसिंह	भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास [१९००ई. से १९४७ई. तक]	राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ए/२६/२, विश्व-विद्यालय मार्ग, तिलक मार्ग, जयपूर-४.	प्रथम संस्करण १९७२
[१०]	नायक प्रवीण	यशपाल का औपन्यासिक शिल्प	प्रतापचन्द जैसवाल संचालक, सरस्वती पुस्तक सदन-आगरा.	प्रथम संस्करण १९६३
[११]	नारायण सुषमा	भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ती	हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली-७, पटना-४.	प्रथम संस्करण १९६६.
[१२]	पाण्डेय जनार्दन	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति.	सरस्वती प्रकाशन मन्दिर ६९ नया बैरहना, इलाहाबाद-३.	प्रथम संस्करण १९८२.
[१३]	बिस्सा कृष्णकुमार	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना	दिनमान प्रकाशन ३०१४, चरखेवालान, दिल्ली-११०००६.	प्रथम संस्करण १९८४
[१४]	"मधुर" रामनारायण सिंह	हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास	ग्रन्थम, रामबाग, कानपूर-१२	जनवरी १९७१
[१५]	मिलिन्द जगन्नाथ प्रसाद	वीरांगना लक्ष्मीबाई का बलिदान	श्री देवकीनंदन कचंन भवन, २७ गुसाईपुरा - खत्रियाना मार्ग, झाँसी [उत्तरप्रदेश]	प्रथम संस्करण १९७८

१.	२.	३.	४.	५.
[१६]	मिलिन्द जगन्नाथ प्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	श्री. देवकीनंदन कंचन भवन, २७ गुसाईंपूरा, खत्रियाना मार्ग, झाँसी [उत्तरप्रदेश]	प्रथम संस्करण १९८०
[१७]	मिश्र दुर्गा शंकर	साहित्यिक निबन्ध	न्यु बिल्डिंगस, अमीनाबाद, लखनऊ.	संस्करण १९७४
[१८]	वर्मा वृन्दावनलाल	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	सत्यदेव वर्मा मयूर प्रकाशन प्रा. लि. झाँसी.	सातवां संस्करण १९६७
[१९]	व्यथित-हृदय	स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी	जगदीश भारद्वाज सामायिक प्रकाशन ३५४३, जटवाडा, दरियागंज नई, दिल्ली ११०००२.	संस्करण १९९३
[२०]	शरण	श्रेष्ठ हिन्दी निबन्ध	प्रेम प्रकाशन मन्दिर, ३०१२, बल्लीमारान, दिल्ली, ११०००६.	प्रथम संस्करण १९८३
[२१]	शास्त्री उमेश	हिन्दी उपन्यास का उद्भव एवं विकास	देवनागर प्रकाशन, चौडा रास्ता, जयपूर	प्रथम संस्करण १९८७
[२२]	सिंहल शशिभूषण	उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा	दिनमान प्रकाशन, ३०१४, चरखेवालान, दिल्ली-६.	प्रथम संस्करण १९८९.

अप्रकाशित सहायक शोध प्रबन्ध :-

	पुस्तक ग्रंथ	विश्वविद्यालय	प्रस्तुत कर्ता.
[१]	जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द" व्यक्तित्व एवं कृतित्व [अप्रकाशित शोध प्रबन्ध]	मेरठ विश्वविद्यालय की पी. एच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध	प्रस्तुत कर्ता
[२]	जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द के साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना - [अप्रकाशित शोध प्रबन्ध]	मेरठ विश्वविद्यालय की पी. एच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध	प्रस्तुत कर्ता जय गोपाल सेठी.

	उत्पत्तिकोश और शब्द कोश	सम्पादक	प्रकाशन	प्राप्त संस्करण
[१]	आधुनिक-हिन्दी शब्द कोश	गोविन्द चातक	तक्षशिला प्रकाशन २३/४७६२ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - ११०००२.	प्रथम संस्करण १९८६.
[२]	आदर्श मराठी शब्द कोश	प्र. न. जोशी	अ. ज. प्रभु विदर्भ मराठवाडा बुक कंपनी १३३४ शुक्रवार पेठ, पुणे-२.	प्रथमावृत्ति १९७०.
[३]	The Conise Oxford Dictionary of Current English	H.W.Fowler and F.G. Fowler	JOHN Brown Oxford University House - Calcutta-13.	Fifth Edition 1970
[४]	PIONEER Twentieth Century Dictionary English to English & Hindi.	Mr.Ronald Daniels Shri Visheshwar Kumar	J.S.Sant Singh & Sons,Publishers & Book sellers 3755,Churiwalan DELHI-110006.	1946
[५]	नालंदा विशाल शब्द सागर	आदीशकुमार जैन	आदीशकुमार जैन सुपुत्र -ला फुलचन्द जैन आदीश बुक डेपो दिल्ली ११०००५.	१९८८
[६]	प्रामाणिक हिंदी कोश	रामचंद्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कुटीर, हाथी गल्ली, बनारस	प्रथम संस्करण राम नवमी २००७ वि. षष्ठम संस्करण १९६४.
[७]	भार्गव आदर्श शब्द कोश	प. रामचन्द्र पाठक		षष्ठम संस्करण १९६४.
[८]	बृहत मराठी -हिन्दी शब्दकोश	गो. प. नेने श्रीपाद जोशी	ग. वा. करमरकर सचिव, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, ३८७नारायण पेठ, पुणे-३०.	प्रथमावृत्ती डिसेंबर १९७१

१.	२.	३.	४.	५.
[९]	मानक हिन्दी कोश [चौथा खण्ड]	रामचन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	प्रथम संस्करण शाकाब्द १८५०, सन १९६५.
[१०]	मानक-अँग्रेजी -हिन्दी कोश	सत्यप्रकाश, डी. एस. सी. बलभद्र प्रसाद मिश्र	प्रभातशास्त्री, प्रधान मंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	प्रथम संस्करण १९७१.
[११]	शिक्षार्थी हिन्दी-अँग्रेजी शब्द कोश	हरदेव बाहरी	वाणी प्रकाशन, ६१ एफ. कमलानगर, दिल्ली-११०००७.	प्रथम संस्करण १९८१
[१२]	संस्कृत -इंग्लिश डिक्शनरी	मोतीलाल बनारसीदास	जवाहरनगर, दिल्ली-७	तृतीय संस्करण १९६५.
[१३]	हिन्दी शब्दसागर	करुणापति त्रिपाठी	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	प्रथम संस्करण ५१०० सं २०२५
[१४]	राजपाल हिन्दी शब्द कोश	हरदेव बाहरी	I.S.B.N.81-7028-086-9. रामप्रिन्टोग्राफ दिल्ली.	नवा संस्करण -१९९५.
[१५]	हिन्दी विश्वकोश	नगेन्द्रनाथ वसु	बी. आर. पब्लीसींग कोपारेशन, ४६१, विवेकानंदनगर, दिल्ली ११००५२.	प्रथम संस्करण १२१९
[१६]	"नवम् भाग"	"	"	१९८६.